प्रेम से प्रेरित सेवकाई

पाठ 9, अगस्त 29, 2026 के लिए

हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह

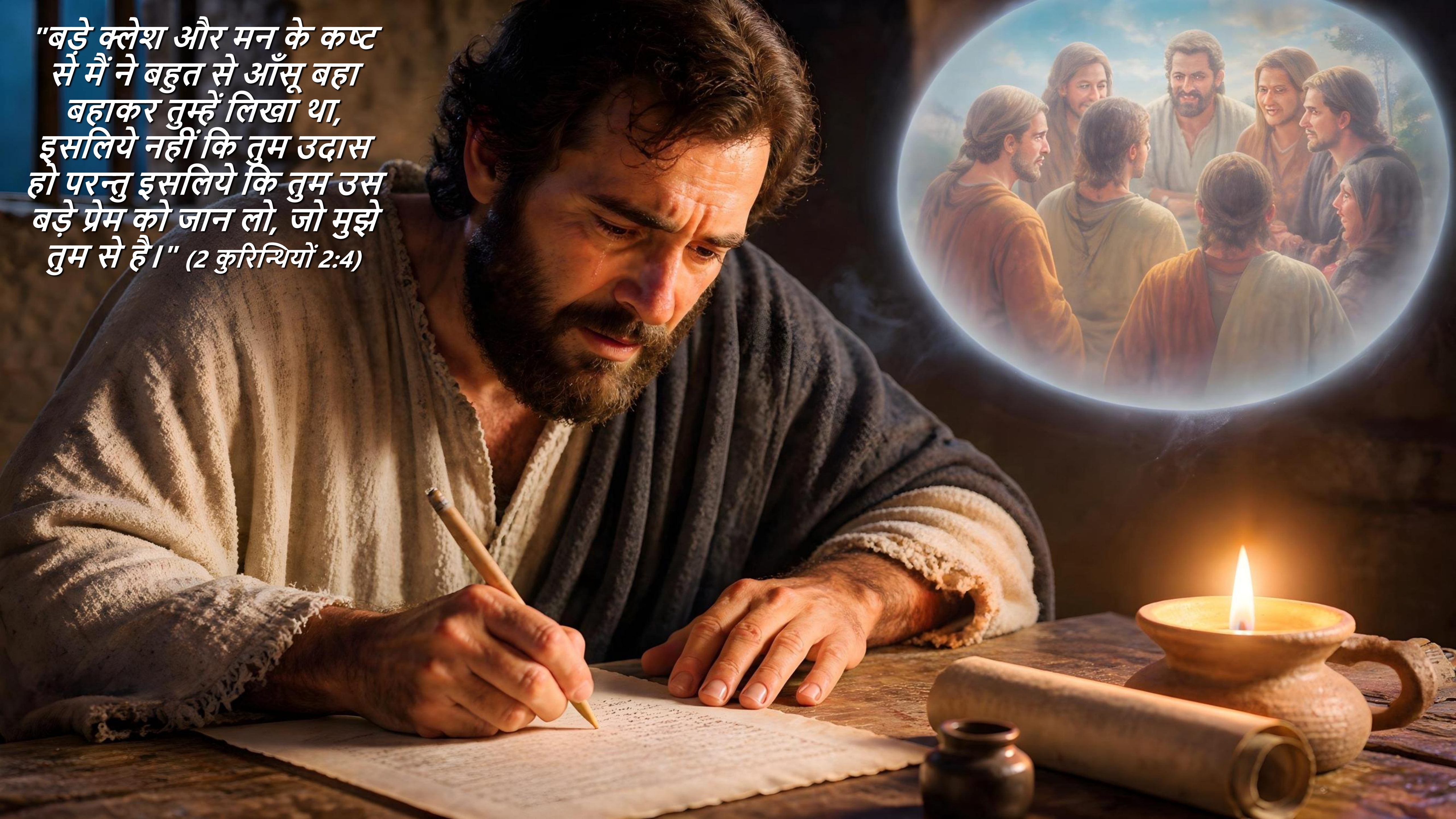
"बड़े क्लेश और मन के कष्ट
से मैं ने बहुत से आँसू बहा
बहाकर तुम्हें लिखा था,
इसलिये नहीं कि तुम उदास
हो परन्तु इसलिये कि तुम उस
बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे
तुम से है।" (2 कुरिन्थियों 2:4)

जब हम पौलुस की कुरिन्थियों के नाम दूसरी पत्री का अध्ययन करते हैं, तो हम देखते हैं कि प्रेरित कलीसिया के कल्याण के प्रति अत्यंत चिंतित है।

यद्यपि पाप से भरी इस दुनिया में परमेश्वर के मार्गों पर चलना कभी भी आसान नहीं रहा, फिर भी पहली शताब्दी में अपने आप को मसीही घोषित करना गंभीर कठिनाइयों का सामना करना था।

पौलुस कलीसिया को इन कठिनाइयों—चाहे वे आंतरिक हों या बाहरी—का सामना करने के लिए तैयार करता है और उन्हें निःस्वार्थ प्रेम में एकजुट होकर एक देह बनने की शिक्षा देता है। उसकी इस शिक्षा से हम आज यह सीख सकते हैं कि हम "जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध" बनें (2 कुरिन्थियों 2:16)।

- दुःख में परमेश्वर की शान्ति और सांत्वना
- सेवकाई में पवित्रता और निष्कपटता
- बुद्धिमानी से आचरण करना
- क्षमा और पुनर्स्थापना
- मसीह की सुगंध

दुःख में परमेश्वर की शान्ति और सांत्वना

“परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। (2 कुरिन्थियों 2:14)

कुरिन्थियों के नाम दूसरी पत्री वह पत्री है जिसमें पौलुस सांत्वना के विषय में सबसे अधिक विस्तार से लिखता है। कलीसिया एक कठिन समय से गुजर रही थी, और पौलुस की पिछली पत्री ने उन्हें गहरे दुःख में डाल दिया था।

किन्तु वह दुःख “परमेश्वर की इच्छा के अनुसार” था, जो मन फिराव की ओर ले जाता है (2 कुरिन्थियों 7:10)। इसलिए पौलुस नहीं चाहता कि वह दुःख उन्हें अभिभूत कर दे, बल्कि यह चाहता है कि उन्हें सांत्वना मिले।

वह स्वयं भी ऐसे समयों से होकर गुजरा था जब उसका जीवन संकट में पड़ गया था और वह निराश हो गया था (2 कुरिन्थियों 1:8–10)। परन्तु परमेश्वर ने उसे सांत्वना दी, और अब वही सांत्वना वह कलीसिया तक पहुँचा रहा है (2 कुरिन्थियों 1:6)।

परमेश्वर की सांत्वना

- यह हमें भय से मुक्त करती है।
- यह हमें उन अवसरों की याद दिलाती है जब उसने हमारी सहायता की थी।
- यह हमें क्लेश सहने की सामर्थ्य देती है।
- यह हमें आत्मिक परिपक्वता की ओर ले जाती है।
- यह हमें दूसरों के लिए मध्यस्थता करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- जिस प्रकार परमेश्वर ने हमें सांत्वना दी है, उसी प्रकार हम भी एक-दूसरे को सांत्वना देते हैं।

सेवकाई में पवित्रता और निष्कपटता

“क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच, हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था।” (2 कुरिन्थियों 1:12)

कुछ लोग पौलुस को तुच्छ समझते थे और उस पर निर्बल तथा अस्थिर होने का आरोप लगाते थे (2 कुरिन्थियों 10:10)। इसलिए, और ताकि उसकी सलाह को स्वीकार किया जाए, प्रेरित के लिए इन आरोपों के विरुद्ध अपना बचाव करना आवश्यक था।

एक मनुष्य के रूप में वह स्वयं को अत्यन्त तुच्छ समझता था (इफिसियों 3:8)। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से वह यह कहने में गौरव का अनुभव कर सकता था कि उसका विवेक शुद्ध था (2 कुरिन्थियों 1:12)।

वह और उसके सहयोगी विश्वासपूर्वक कह सकते थे कि उसका आचरण कलीसिया के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर पवित्र और निष्कपट [शुद्ध] था।

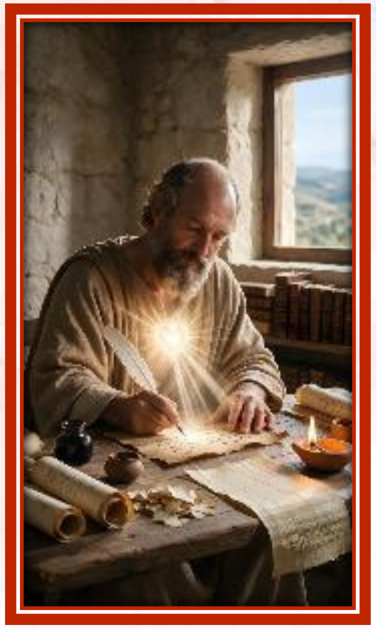

इसी कारण पौलुस के पत्र किसी भी छिपे हुए स्वार्थ या गुप्त उद्देश्य से रहित थे। वह आशा करता था कि इन पत्रों को उसी पवित्रता और निष्कपटता के संदर्भ में पढ़ा और समझा जाएगा—अर्थात् वे उनके प्रति प्रेम से लिखे गए थे और उनका उद्देश्य केवल उनका भला करना था (2 कुरिन्थियों 1:13–14)।

बुद्धिमानी से आचरण करना

"मैं परमेश्वर को गवाह करके कहता हूँ कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिये नहीं आया, कि मुझे तुम पर तरस आता था।" (2 कुरिन्थियों 1:23)

अपनी पहली पत्री में पौलुस ने कुरिन्थियों को उस यात्रा-मार्ग के बारे में बताया था, जिस पर वह जाने की योजना बना रहा था (1 कुरिन्थियों 16:5–11):

इफिसुस → मकिदुनिया → कुरिन्थुस → यहूदिया

बाद में लिखी गई एक अन्य पत्री (जो अब उपलब्ध नहीं है; 2 कुरिन्थियों 7:8) में उसने उन्हें बताया कि वह उनसे दो बार मिलने का इरादा रखता है (2 कुरिन्थियों 1:15–16):

इफिसुस → कुरिन्थुस → मकिदुनिया → कुरिन्थुस → यहूदिया

किन्तु बाद में उसने अपनी योजना बदल दी और पहला दौरा न करने का निर्णय लिया (2 कुरिन्थियों 1:23)। इस परिवर्तन के कारण कुछ लोगों ने उसकी आलोचना की और उसे अस्थिर तथा निर्णय बदलने वाला व्यक्ति कहा। आखिर उसने अपना निर्णय क्यों बदला?

कुरिन्थुस में उत्पन्न समस्याओं के कारण वहाँ पौलुस की उपस्थिति आवश्यक प्रतीत होती थी। परन्तु वह जानता था कि वहाँ उसका सामना विरोध और टकराव से होगा। उनके प्रति अपने गहरे प्रेम के कारण वह उस कठोर टकराव से बचना चाहता था (2 कुरिन्थियों 2:1–4)।

क्षमा और पुनर्स्थापना

"जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है" (2 कुरिन्थियों 2:10)

जब पौलुस त्रुआस की ओर जा रहा था, तब तीतुस कुरिन्थुस गया। त्रुआस से पौलुस मकिदुनिया चला गया। परन्तु वह बहुत व्याकुल था, क्योंकि तीतुस उससे त्रुआस में नहीं मिला था कि कुरिन्थुस की कलीसिया का समाचार दे सके (2 कुरिन्थियों 2:12–13)।

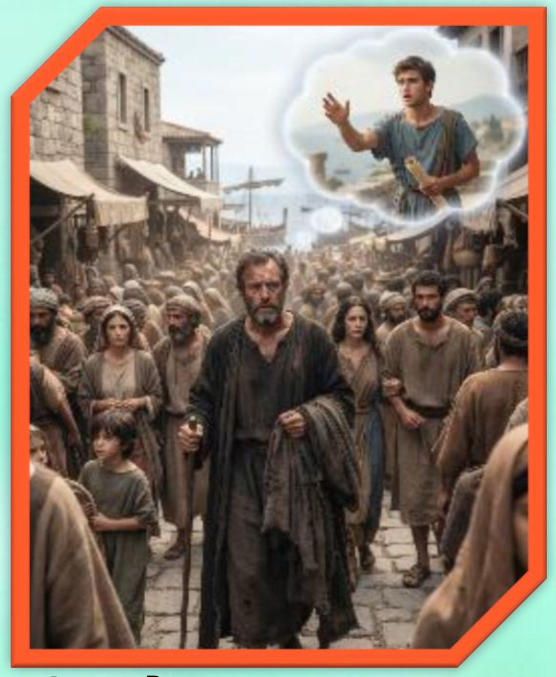

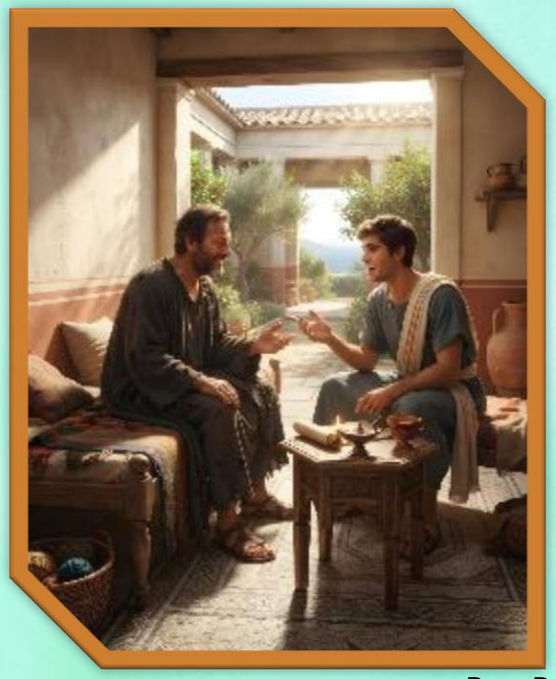

कुछ समय बाद तीतुस अंततः मकिदुनिया में पौलुस से मिला। उसने बताया कि कलीसिया ने प्रेरित की चेतावनियों और समझाने को बहुत अच्छी तरह स्वीकार किया था (2 कुरिन्थियों 7:5–9, 13–16)।

जिन विषयों का समाधान करना आवश्यक था, उनमें से एक कलीसिया का अनुशासन था। प्रेरित की आज्ञा का पालन करते हुए, दोषी व्यक्ति को ताड़ना दी गई थी, और उसने उस ताड़ना को स्वीकार भी कर लिया था। अब पौलुस उनसे अगला कदम उठाने का आग्रह करता है—उसे क्षमा करें और उसे फिर से संगति में बहाल करें (2 कुरिन्थियों 2:5–11)।

मसीह की सुगंध

“क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिये मसीह की सुगन्ध हैं। (2 कुरिन्थियों 2:15)

जब पौलुस इस बात का उल्लेख करता है कि परमेश्वर ने त्रुआस में सुसमाचार के सफल प्रचार के लिए “एक द्वार खोल दिया” था, तो वह स्तुति और विजय के स्वर में कह उठता है: “परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है” (2 कुरिन्थियों 2:14)।

सब जगह फैलने वाली सुगंध के समान, मसीह का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचता है। कुरिन्थियों के लिए, और हमारे लिए भी, यह सुगंध अनन्त जीवन की सुगंध है। परन्तु जो लोग इस बुलाहट को अस्वीकार करते हैं, उनके लिए यह मृत्यु की गंध बन जाती है (2 कुरिन्थियों 2:15–16)।

इससे जुड़ी महान जिम्मेदारी पर बल देते हुए, पौलुस समझाता है कि सन्देश ईमानदारी और निष्कपटता के साथ सुनाया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य किसी प्रकार का व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना नहीं, बल्कि सुनने वालों का उद्धार होना चाहिए (2 कुरिन्थियों 2:17)।

“इस विश्वासयोग्य दूत ने यह उत्साहवर्धक समाचार लाकर सुनाया कि कुरिन्थुस के विश्वासियों के बीच एक अद्भुत परिवर्तन आ गया था। उनमें से बहुतों ने पौलुस के पत्र में दी गई शिक्षा को स्वीकार कर लिया था और अपने पापों से मन फिराया था। उनका जीवन अब मसीही धर्म के लिए कलंक नहीं रहा, बल्कि व्यावहारिक भक्ति के पक्ष में एक शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न करने लगा था। [...]

वह मन फिराव, जो हृदय पर ईश्वरीय अनुग्रह के प्रभाव से उत्पन्न होता है, पापों को स्वीकार करने और उन्हें छोड़ देने की ओर ले जाता है। प्रेरित ने घोषणा की कि ऐसे ही फल कुरिन्थुस के विश्वासियों के जीवन में दिखाई दिए थे।”

ई जी व्हाइट (प्रेरितों के काम, पृष्ठ 324)